नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय और कॉरनेल यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. के बीच एम.ओ.यू.

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर और कॉरनेल यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. के साथ एग्रीमेंट हो रहा है जिसके अंतर्गत जंगली मांसाहारी जानवरों मुख्यतः बाघ में पाई जाने वाली कैनाइन डिस्टेंपर बीमारी का अध्ययन किया जाएगा। नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के अंतर्गत स्कूल ऑफ वाइल्ड लाइफ फोरेंसिक एण्ड हेल्थ में कैनाइन डिस्टेंपर बीमारी पर पिछले कुछ वर्षों से अध्ययन चल रहा है। जिसमें मध्य भारत में पाई जानें वाली बिल्ली प्रजाती के जीव जैसे बाघ व तेंदुआ में इस बीमारी के लक्षण पाए गए, परंतु यह बीमारी किस स्तर तक इनके संरक्षण को प्रभावित करती है इस हेतु अग्रिम शोध के लिए कार्य शुरू हो गया है और इसी तत्वाधान में कॉरनेल यूनिवर्सिटी ने अपना योगदान देने की इच्छा जताई है। इस संयुक्त शोध में पिछले पॉच–छः वर्षो के जैविक नमूनों का अध्ययन किया जाएगा जो कि स्कूल ऑफ वाइल्ड लाईफ फोरेंसिक एण्ड हेल्थ के रिपोसिटॉरीस में संरक्षित हैं। इन नमूनों का एवं अन्य जंगली मांसाहारी जानवरों के प्राप्त संरक्षित नमूनों से कैनाइन डिस्टेंपर बीमारी का एडवांस तकनीक से अध्ययन किया जाएगा जिससे इस बीमारी का प्रभाव इन मांसाहारी जानवरों मुख्यतः बाघ के स्वास्थ्य पर किस स्तर तक है इसका पता लगाया जा सकेगा। कॉरनेल यूनिवर्सिटी के डॉ. मार्टिन गिलबर्ट इस शोध में सहयोग देंगे जिन्होंने रूस में कैनाइन डिस्टेंपर बीमारी के प्रकोप का बाघों में उत्कृष्ट अध्ययन किया है। कुलपति डॉ. पी. डी. जुयाल ने आशा व्यक्त की है कि कैनाइन डिस्टेंपर बीमारी के निदान व उपचार में मदद मिलेगी। साथ ही फैकल्टी के प्रशिक्षण के उपयुक्त अवसर प्राप्त होंगे। इस संबंध में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली को स्वीकृति प्रदान करने हेतु प्रस्ताव कुलपति, नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा भेजा गया है।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर